© 2015 IJSRSET | Volume 1 | Issue 3 | Print ISSN : 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099

रामचरित मानस की प्रासंगिकता

डॉ0 प्रवीन कुमार यादव,

असि0प्रो0 हिन्दी, पं0रा0ल0शु0राजकीय

स्नातकोत्तर महाविद्यालय , आलापुर अम्बेडकर

नगर,उ0प्र0,भारत

महाकवि तुलसीदास कृत रामचरित मानस हिन्दी जगत का अत्यन्त लोकप्रिय महाकाव्य है।इसकी लोकप्रियता हिन्दी भूभाग तक ही नही है, अपितु यह हिन्दीतर भारतीय प्रान्तों में भी हिन्दी जानने वाले गैर हिन्दी भाषियों के बीच भी लोकप्रिय है। भारतीय परम्परा और संस्कृति को समझन–बुझने के क्रम में भारत से बाहर के बुद्धजिवियों द्वारा भी इस महाकाव्य का अनुशीलन प्रमुखता से होता रहा है। इसकी कथा पौराणिक है। इसके नायक राम भारतीय जनमानस में अत्यन्त लोकप्रिय है। कवि वाल्मीक कृत रामायण से लेकर आजतक लगभग तीन सौ रामायणों की रचना की जा चुकी है।परन्तु इन सब के बीच में तुलसी कृत राम चरित मानस सर्वाधिक लोकप्रिय है।

इसके अनेक कारण हैं। पहली बात तो यहीं है कि यह जनभाषा में सुलभ है।संस्कृत भाषा का ज्ञान ही कम लोगों को है। अपभ्रंष को जानने वालों की संख्या बहुत कम है। परन्तु मात्र आज भी बोली जाने वाली जनभाषा अवधी में इसका रचा जाना ही इसकी ख्याति का एकमात्र कारण नहीं है बल्कि इसमें ऐसी अनेक बातें मौजूद है

जो समाज के विभिन्न समुदायों और वर्गो के लिए अलग अलग महत्व रखती है।मसलन ब्राह्मण संस्कृति के पुजारियों के लिये यह अनकी विचारधारा एवं संस्कृति का पूंजीभूत संकलन है तो जनसामान्य में पारिवारिक और सामाजिक मूल्यों एवं उत्तरदायित्वों का संस्कार देने वाली एक महत्वपूर्ण एवं अनुपेक्षणीय रचना है। किसी भी बडी रचना को उसमें स्थापित जीवन मूल्यों की महत्ता के कारण ही श्रेष्ठ माना जाता है। किसी भी मानव समाज में लम्बे समय से जो व्यवहार स्वीकृत और मान्य हो जाते है उन्हें ही मूल्य कहा जाता है।प्रसिद्ध समाज

शास्त्री राधाकमल मुखर्जी ने मूल्य के सम्बन्ध में लिखा है,'मूल्य समाज स्वीकृत इच्छाएं एवं लक्ष्य है, जो सीखने एवं सामाजीकरण की प्रकिया के माध्यम से अन्तरीकृत हो जाती है और जो विषयीगत प्राथमिकताएं, प्रतिमान और अभिलाषाएं बनती है।'[1] समाजशास्त्री जॉनसन ने लिखा है,'मूल्यों को सांस्कृतिक अथवा व्यक्तिगत धारणा या प्रतिमान कह सकते जिससे तुलना करके दूसरी चीजों को स्वीकृत अथवा अस्वीकृत,अपेक्षित अथवा अनपेक्षित,अधिक या कम गुणवान अथवा उचित माना जा सकता है।'[2] गोल्डस्मिथ का मानना है,'मूल्य वे सांस्कृतिक साधन है जिनके द्वारा सकारात्मक प्रभावों का संधान किया जाता है।'[3] इसीलिए रामचरित मानस कट्टर हिन्दुत्ववादियों के साथ उदार हिन्दुवादी तथा जनसाधरण में अपनी अनुभवप्रसूत सूक्तियों तथा उच्च

पारिवारिक एवं सामाजिक प्रतिमानों की स्थापना करने वालों जीवन मूल्यों की नियोजना की वजह से भी पढी और उद्धृत की जाने वाली महत्वपूर्ण रचना है। महाकाव्य को सामंती समाज का प्रतिनिधि काव्यरुप माना जाता है। मानस के नायक राम है,जो राजा दशरथ के पुत्र है। राम के चरित्र का विकास लोक जीवन के मध्य हेाता है।राम जब राजमहल छोडकर गावों के रास्ते वन जाते है तब उन्हें व्यापक जनसमुदाय एवं उनकी वास्तविक दशाओं का परिचय प्राप्त होता है। आलोचकों का मानना है कि दुखित जनों,तपस्वियों के उद्धार एवं पापियों के विनाश करने से ही उनका व्यक्तित्व निखरता है। आचार्य रामचन्द्रशुक्ल का मानना है कि लोक मंगल की स्थपना के लिए राम जीवन पर्यन्त संघर्ष करते है। इसलिए उन्होंने तुलसी को लोक मंगल की साधनावस्था का कवि कहा है। तुलसी मानस में लिखते है–जब जब होईं धरम की हानी। बाढैं असुर अधम
अभिमानी,।वास्तव में क्या ऐसा होता है? राम जिनका उद्धार करते है उनमें से अधिकांश भक्त है। उनके भक्ति मार्ग में अवरोध डालने वाली जो शक्तियॉ है,उन्हें राक्षस कहा गया है। राम उनका वध करके आर्य संस्कृति के पुजारियों की रक्षा करते है। इसे ही लोक मंगल की साधनावस्था बताया गया है। राम के इस भक्तोद्धार अभियान में आम आदमी का कौन सा उद्धार हो जाता है,उन्हे कौन सी स्वतंत्रता और अधिकार प्राप्त हो जाते है,इस प्रष्न का उत्तर तलाशने में कोई बहुत कारगर चीज हाथ नही लगती । फिर राम चरित मानस की महत्ता किस बात में है?कौन सी चीज इसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ का दर्जा दिलाती है? क्या यह ब्राह्मण संस्कृति के उपासकों और धर्म की सत्ता के बल पर शूद्रजातियों पर शासन करने वालों के द्वारा प्रचारित एजेण्डे का एक महत्वपूर्ण साधन तो नहीं हैं? बात इतनी सीधी सरल नहीं है।यद्यपि क्लासिक रचनाओं का विचारधारा और परम्पराओं से गहरा सम्बन्ध होता है। इसमें कोई संदेह नही कि रामचरित मानस में पौराणिक कथा के माध्यम से वर्णाश्रमी सनातन हिन्दू संस्कृति के उदात्त मूल्यों की स्थापना पर बल है,उसके उज्ज्वल पक्ष को प्रकाषित कर आर्य संस्कृति की श्रेष्ठता स्थापित करने की सूक्ष्म कोशिश भी है। परन्तु यह कोशिश सतही तौर पर या हठधर्मी तरीके से नहीं की गयी है बल्कि,अनेक विचारधाराओं और तद्युगीन भारतीय समाज में मौजूद अनेक संस्कृतियों के उच्च मानवीय गुणें का समाहार करके हासिल किया गया है।

अतः यह इस ग्रन्थ में स्वाभाविक रुप में उपस्थित है। इसमें जैन दर्शन का इन्द्रिय निग्रह,बुद्ध की करुणा, वैष्णव मत की सच्ची हार्दिकता और वेदान्त का तत्वज्ञान सब एक साथ मौजूद है। राम के व्यक्तित्व में ऐसे गुण विद्यमान है जो किसी भी समाज के लिए प्रेरणादायक और अनुकरणीय हो सकते है। वह बहुत ही धीर–गम्भीर है। गुरु भक्त है ।आज्ञाकारी पुत्र है।आदर्ष भाई है। आदर्ष पति है। जन भावनाओं को तरजीह देने वाले राजा है। भक्तों के उद्धार के लिए पराक्रमशील वीर योद्धा है।

राम बाल्यावस्था से ही प्रातः काल उठकर माता–पिता–गुरु के चरण स्पर्श करते हैं–
'प्रातः काल उठिकै रघुनाथा।मातु पिता गुरु नावहिं माथा।

राम अपने भाईयों में सबसे बडे है। वह अपने अनुजों के प्रति अगाध प्रेम रखते है। उनकी भावनाओं का सदैव ध्यान रखते है। जनकपुर में लक्ष्मण के मनोभावों को बिना कहे ही जानकर ,गुरु विश्वामित्र से आज्ञा लेकर वह उन्हे नगर दर्शन कराते हैं–लखन हृदय लालसा विसेखी।

जब भरत राम वन गमन के उपरान्त बहुत दुखी मन से भगवान तुल्य अपने बडे भाई को मनाने वन जाते है तो वाल्यावस्था में अपने प्रति राम के स्नेह और सद्व्यवहार को याद करते है–

'मै जानउॅ निज नाथ सुभाउ । अपराधिहुॅ पर कोह न काउ ।।

मो पर कृपा सनेह विसेषी । खेलत खुनिस न कबहूँ देखी ।।
सिसुपन तें परिहरेउँ न संगू । कबहूँ न कीन्ह मोर मन भंगू ।।

भरत राम वन गमन की घटना से बहुत दुखी है। चूँकि यह भयानक दुर्घटना उनको राजा बनाने के निमित्त उनकी माता और दासी मंथरा द्वारा आयोजित हुई है ,अतः लोक प्रवाद की चिन्ता उन्हे बहुत बेचैन करती है कि लोग यह मानने के लिए कत्तई तैयार तैयार नहीं होगें कि भरत इस घटनाक्रम की योजना से अंजान होगें।परन्तु उन्हें पवित्र हृदय वाले,अपने से पहले अपने छोटे भाईयों का ख्याल रखने वाले भाई राम की वन गमन की घटना बहुत बेधती है। परन्तु उन्हे एक बात का भरोसा रहता है कि भैया राम उनके स्वभाव से परिचित है,अतः वह मुझे इसके लिए उत्तरदायी नहीं मानेगें। उन्हें भाई के प्रति भरोसा है–

'जब समझत रघुनाथ सुभाउ । तब पथ परत उतालहि पाउँ ।।

लेकिन जब भरत को जब मॉ कैकेयी का करतब ध्यान आता है तो दुख हावी हो जाता है और जब राम का स्वभाव ध्यान में आता है। तो उनकी षंका निर्मूल हो जाती है कि भैया मुझसे खिन्न होगें–
'समुझि मातु करतब सकुचाहीं

भरत दसा तेहि अवसर कैसी ।जल प्रवाह अलि गति जल जैसी ।।

राम के चरित्र के माध्यम से तुलसी ने शैव, वैष्णव अनेक मतों में समन्वय करने की चेष्टा की है ताकि साम्प्रदायिक झगडों का निस्तारण हो सके।राम शिव को बडा मानकर भजते है तो शिव राम को बडा मानते है।

राम मित्र धर्म का निष्ठापूर्वक निर्वहन करते है,जो उनके दुख निवारण में सहायक रहा है,उसके लिए प्राणप्रण से संलग्न रहते है। सुग्रीव की रक्षा में बालि का बध करते है,लेकिन उसकी पत्नी और बेटे की रक्षा करते है, संरक्षण देते है। रावण से विद्रोह करके राम के पक्ष में खडे विभीषण की रक्षा उन्हे दिए गए वायदे को निभाने के लिए वह उस समय भी चिन्तित रहते है,जब लक्ष्मण को शक्तिबाण लगने के उपरान्त वह बहुत भाव विभोर होकर लक्ष्मण के साथ अपना प्राण त्यागने को सोच रहे होते है।

इस प्रकार सूक्ष्मता से अध्ययन और अनुशीलन करने पर यह ज्ञात होता है कि राम चरित मानस में किसी भी समाज के लिए और किसी भी समय के लिए प्रासंगिक जीवन मूल्यों की स्थापना की गई है।यहीं कोशिश इसे देशकाल की सीमा से परे आज भी प्रासंगिक बनाती है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. Dr. R.K. Mukerjee in 'The Frontiers of Social Sciences'- Page 23
2. H.M. Johnson in 'Sociology: A Systematic Introduction', Page-49
3. W. Gold Schmidt in 'Understanding Human Society', Page- 80
4. तुलसीदास, 'राम चरित मानस' गीता प्रेस गोरखपुर
5. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी